Masjid Ka Ehtiraam (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 295
Weekly Booklet : 295

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त बनाम

# मस्जिद का एह़तिराम

सफ़ह़ात 20


हम दुन्या में किस लिये आए हैं ? 01 मस्जिद के मुतअ़ल्लिक़ 19 आदाब 04
केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया 08 शिफ़ा न मिलने का राज़ 13

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.


नामे रिसाला : **मस्जिद का एह़तिराम**

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक **1444** हि., अप्रैल **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**


मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

# मस्जिद का एह़तिराम

येह रिसाला **(मस्जिद का एह़तिराम)** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट** (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

## क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब ''नेकी की दा'वत'' सफ़ह़ा 414 ता 430 से लिया गया है।

# मस्जिद का एह़तिराम

**दुआए अ़त्तार :** या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : ''**मस्जिद का एह़तिराम**'' पढ़ या सुन ले उसे मस्जिदों से मह़ब्बत और उस का अदबो एह़तिराम करने वाला बना और उसे वालिदैन व ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ''ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दूरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।'' (فردوس الاخبار، 5/277، حدیث:8175)

## हम दुन्या में किस लिये आए हैं ?

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले क़ुरआन, ''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'' सफ़ह़ा 647 पर पारह 18 सूरतुल मुअमिनून आयत नम्बर 115 में **अल्लाह** पाक का इर्शादे मुबारक है **:** ﴿اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं ? बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान)

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** हम सभी को अपनी ज़िन्दगी के ह़क़ीक़ी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये हर दम कोशां रहना चाहिये, गुनाहों से बचना और सवाब के कामों को करते रहना चाहिये। दा'वते इस्लामी का चैनल देखते दिखाते रहिये कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दा'वते इस्लामी के चैनल के प्रोग्राम देखना और दूसरों को देखने की दा'वत देना भी बाइ़से रिज़ाए रब्बुल अनाम और जन्नत में ले जाने वाला काम है। मौत की हर दम याद रखिये ! मौत दुल्हा को ऐ़न बारात से और दुल्हन को ह़जलए अ़रूसी में बिस्तरे राह़त व मसर्रत से यक दम उचक लेती है।

*बोली ख़ल्वत में अजल दूल्हा दुल्हन से वक़्ते ऐ़श*
*है तुम्हें भी क़ब्र के गोशे में सोना एक दिन*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## जब मस्जिद में ज़ोर से क़दम रख कर चलना भी मन्अ़ है तो.....

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का नेकी की दा'वत देने का जज़्बा मरह़बा ! आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ नेकी की दा'वत का सवाब कमाने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते चुनान्चे ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मलिकुल उ़लमा ह़ज़रते

अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती ज़फ़रुद्दीन बिहारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : एक साहि़ब जिन्हें ‘‘नवाब साहि़ब’’ कहा जाता था मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आए और खड़े खड़े बे परवाई से अपनी छड़ी (या’नी हाथ में रखने की लकड़ी WALKING STICK) मस्जिद के फ़र्श पर गिरा दी, जिस की आवाज़ हाज़िरीन ने सुनी । आ’ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने (नेकी की दा’वत देते हुए) फ़रमाया : ‘‘नवाब साहि़ब ! मस्जिद में ज़ोर से क़दम रख कर चलना भी मन्अ़ है, फिर कहां छड़ी को इतनी ज़ोर से डालना !’’ नवाब साहि़ब ने मेरे सामने वा’दा किया कि اِنْ شَآءَاللّٰہ आयिन्दा ऐसा नहीं होगा ।

**अल्लाह पाक की आ’ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

## मस्जिद में मोबाइल फ़ोन की घन्टी बन्द रखिये

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** हर मुसल्मान के लिये ज़रूरी है कि वोह मस्जिद का एह़तिराम करे, मस्जिद में चलते वक़्त पांव की धमक पैदा न हो इस का ख़याल रखना ज़रूरी है नीज़ छड़ी (WALKING STICK) छतरी, हाथ का पंखा, चप्पल, थैला (BAG), बरतन वग़ैरा कोई चीज़ भी इस त़रह़ न डाले कि आवाज़ पैदा हो । अगर मोबाइल फ़ोन हो तो मस्जिद में उस की घन्टी बन्द रखी जाए, अफ़्सोस ! इस की एह़तियात़ कम की जाती है यहां तक कि मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में और वोह भी ऐ़न ख़ानए का’बा के त़वाफ़ में लोगों के मोबाइल फ़ोन की घन्टियां बल्कि مَعَاذَاللّٰہ म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ गूंजती रहती हैं, ह़ालां कि म्यूज़ीकल ट्यून तो मस्जिद के इ़लावा भी **ना जाइज़** है ।

# ‘‘بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ’’ के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद के मुतअ़ल्लिक़ 19 मदनी फूल

एह़तिरामे मस्जिद के ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1548 सफ़ह़ात की किताब, **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 1202 ता 1207 पर बयान कर्दा मदनी फूल कहीं कहीं रद्दो बदल के साथ पेश किये जा रहे हैं इन्हें क़बूल फ़रमा कर अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लीजिये :

﴾1﴿ मरवी हुवा कि एक मस्जिद अपने रब्बे करीम के हुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या की बातें करते हैं। मलाएका उसे आते हुए मिले और बोले : हम उन (मस्जिद में दुन्या की बातें करने वालों) के हलाक करने को भेजे गए हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 16/312)

﴾2﴿ रिवायत किया गया है कि ‘‘जो लोग ग़ीबत करते और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुंह से गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़िरिश्ते **अल्लाह** पाक के हुज़ूर उन की शिकायत करते हैं।’’ سُبْحٰنَ اللّٰہ ! जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्या करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो (मस्जिद में) ह़राम व ना जाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा ! (फ़तावा रज़विय्या, 16/312)

﴾3﴿ **दर्ज़ी** को इजाज़त नहीं कि मस्जिद में बैठ कर कपड़े सिये। हां अगर बच्चों को रोकने और मस्जिद की ह़िफ़ाज़त के लिये बैठा तो ह़रज नहीं। इसी त़रह़ कातिब को (मस्जिद में) उजरत पर किताबत करने की इजाज़त नहीं। (عالمگیری، 1/110)

﴾4﴿ **मस्जिद** के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा हरगिज़ न फेंकें। शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "**जज़्बुल क़ुलूब**" में नक़्ल करते हैं कि मस्जिद में अगर ख़स (या'नी मा'मूली सा तिन्का या ज़र्रा) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में ख़स (या'नी मा'मूली ज़र्रा) पड़ जाने से होती है। (جذب القلوب، ص222)

﴾5﴿ **मस्जिद** की दीवार, इस के फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या उस के नीचे थूकना, नाक सिनक्ना, नाक या कान में से मैल निकाल कर लगाना, मस्जिद की दरी या चटाई से धागा या तिन्का वग़ैरा नोचना सब मम्नूअ़ है।

﴾6﴿ **ज़रूरतन** (मस्जिद के अन्दर) अपने रूमाल वग़ैरा से नाक पोंछनें में कोई मुज़ायक़ा नहीं।

﴾7﴿ **मस्जिद** में झाड़ू देने में जो गर्द और कूड़ा वग़ैरा निकले वोह ऐसी जगह मत डालिये जहां बे अदबी हो। ﴾8﴿ **जूते** उतार कर मस्जिद में साथ ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा बाहर झाड़ लीजिये। अगर पाउं के तल्वों में गर्द के ज़र्रात लगे हों तो अपने रूमाल वग़ैरा से पोंछ कर मस्जिद में दाख़िल हों। मस्जिद में गर्द का कोई ज़र्रा न गिरने पाए इस का ख़याल रखिये। ﴾9﴿ **मस्जिद** के वुज़ूख़ाने पर वुज़ू करने के बा'द पाउं वुज़ूख़ाने ही पर अच्छी त़रह़ ख़ुश्क कर लीजिये, गीले पाउं ले कर चलने से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली और बदनुमा हो जाती हैं।

अब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मल्फ़ूज़ाते शरीफ़ा से बा'ज़ आदाबे मस्जिद पेश किये जा रहे हैं :

﴾10﴿ मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है।

﴾11﴿ वुज़ू करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (याद रखिये! आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त़रे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, ना जाइज़ व गुनाह है)

﴾12﴿ **मस्जिद** के एक दरजे से दूसरे दरजे के दाख़िले के वक़्त (मसलन सेह्न में दाख़िल हों तब भी और सेह्न से अन्दरूनी हिस्से में जाएं जब भी) सीधा क़दम बढ़ाया जाए ह़त्ता कि अगर सफ़ बिछी हो उस पर भी सीधा क़दम रखें और जब वहां से हटें तब भी सीधा क़दम फ़र्शे मस्जिद पर रखें (या'नी आते जाते हर बिछी हुई सफ़ पर पहले सीधा क़दम रखें) या ख़त़ीब जब मिम्बर पर जाने का इरादा करे पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो (भी) सीधा क़दम उतारे।

﴾13﴿ **मस्जिद** में अगर छींक आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले इसी त़रह़ खांसी। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। इसी त़रह़ डकार को ज़ब्त़ करना चाहिये और न हो तो ह़त्तल इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगर्चे ग़ैरे मस्जिद में हो। ख़ुसूसन मजलिस में या किसी मुअ़ज़्ज़म (या'नी बुज़ुर्ग) के सामने बे तहज़ीबी है। ह़दीस में है : एक शख़्स ने दरबारे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डकार ली आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम से अपनी डकार दूर रख कि दुन्या में जो ज़ियादा मुद्दत तक पेट भरते थे वोह क़ियामत के दिन ज़ियादा मुद्दत तक भूके रहेंगे।" (شرح السنۃ، 7/294، حدیث:2944) और जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये। अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूं

कि येह शैत़ान का क़ह्क़हा है। जमाही जब आए ह़त्तल इम्कान मुंह बन्द रखें मुंह खोलने से शैत़ान मुंह में थूक देता है। अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें और इस त़रह़ भी न रुके तो ह़त्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उल्टा हाथ उल्टी त़रफ़ से मुंह पर रख लें। चूंकि जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है और अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام इस से मह़फ़ूज़ हैं। लिहाज़ा जमाही आए तो येह तसव्वुर करें कि "अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام को जमाही नहीं आती।" اِنۡ شَآءَاللہ फ़ौरन रुक जाएगी। (ردالمحتار، 2/498، 499)

﴾14﴿ तमस्ख़ुर (मस्ख़रा पन) वैसे ही मम्नूअ़ है और मस्जिद में सख़्त ना जाइज़।

﴾15﴿ मस्जिद में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है। मौक़अ़ के लिह़ाज़ से तबस्सुम में ह़रज नहीं।

﴾16﴿ मस्जिद के फ़र्श पर कोई चीज़ फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। मौसिमे गर्मा में लोग पंखा झलते झलते फेंक देते हैं (मस्जिद में टोपी, चादर वग़ैरा भी न फेंकें इसी त़रह़ चादर या रूमाल से फ़र्श इस त़रह़ न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो) या लकड़ी, छत्री वग़ैरा रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं। इस की मुमानअ़त है। ग़रज़ मस्जिद का एह़तिराम हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।

﴾17﴿ मस्जिद में ह़दस (या'नी रीह़ ख़ारिज करना) मन्अ़ है ज़रूरत हो तो (जो ए'तिकाफ़ में नहीं हैं वोह) बाहर चले जाएं। लिहाज़ा मो'तकिफ़ को चाहिये कि अय्यामे ए'तिकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हल्का रखे कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़्राजे रीह़ की ह़ाजत न हो। वोह इस के लिये बाहर न जा सकेगा। (अलबत्ता इह़ात़ए मस्जिद में मौजूद बैतुल ख़ला में रीह़ ख़ारिज करने के लिये जा सकता है)

﴾18﴿ क़िब्ले की त़रफ़ पांव फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है। मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाए कि येह ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है। ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मस्जिद में तन्हा बैठे थे, पांव फैला लिया, गोशए मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी : "सरी ! बादशाहों के हुज़ूर में यूं ही बैठते हैं ?" मअ़न (या'नी फ़ौरन) पांव समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्ते इन्तिक़ाल ही फैले। (سبع سنابل، ص131) (छोटे बच्चों को भी प्यार करते, उठाते, लिटाते वक़्त एह़तियात़ करें कि उन के पांव क़िब्ले की त़रफ़ न हों और मुताते (पोटी करवाते) वक़्त भी ज़रूरी है कि उस का रुख़ या पीठ क़िब्ले की त़रफ़ न हो)

﴾19﴿ **इस्ति'माल** शुदा जूता मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बे अदबी है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 317 ता 323 मुलख़्ख़सन)

*इलाही करम बहरे शाहे अ़रब हो हमें मस्जिदों का मुयस्सर अदब हो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## कैन्सर का मरीज़ ठीक हो गया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी पर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेह़द करम है। बारहा सुनने में आया कि डॉक्टरों ने जिन मरीज़ों को ला इ़लाज क़रार दे दिया उन का मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के दुआ़एं मांगने के सबब ख़ैर से इ़लाज हो गया चुनान्चे, एक इस्लामी भाई ने एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ लिख कर दिया जिस का मज़्मून कुछ यूं था : कि एक इस्लामी भाई जो कि "कैन्सर" के मरीज़ थे, उन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। दौराने सफ़र बेचारे काफ़ी सहमे हुए और मायूस से थे। आ़शिक़ाने रसूल ढारस बंधाते और उन के

लिये दुआएं भी फ़रमाते। एक दिन सुब्ह के वक़्त बैठे बैठे अचानक उन्हें क़ै हुई और उस में एक गोश्त की बोटी ह़ल्क़ से निकल पड़ी ! क़ै के बा'द उन को काफ़ी सुकून मिल गया। मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर जब डॉक्टर से रुजूअ़ किया और दोबारा टेस्ट करवाए तो ह़ैरत बालाए ह़ैरत कि उन का मरज़े सरत़ान या'नी कैन्सर ख़त्म हो चुका था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰى اِحسانِه।

*मरज़े निस्यान हो चाहे सरत़ान हो, कोई सी हो बला, क़ाफ़िले में चलो*
*दूर बीमारियां और परेशानियां हों ब फ़ज़्ले ख़ुदा क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

## मदनी क़ाफ़िले के मरीज़ मुसाफ़िरों के बारे में 5 मदनी फूल

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **अल्लाह** पाक ने मदनी क़ाफ़िले की बरकत से कैन्सर के मरीज़ को सिह़्ह़त इनायत फ़रमा दी। मदनी क़ाफ़िले के मरीज़ मुसाफ़िरों के बारे में 5 मदनी फूल क़बूल फ़रमाइये : ﴾1﴿ **अल्लाह** पाक ही ह़क़ीक़त में शाफ़िउल अमराज़ या'नी बीमारियों से शिफ़ा देने वाला है। सभी जानते हैं कि बा'ज़ अवक़ात बड़े बड़े माहिर त़बीब बेहतर से बेहतरीन दवाएं देते हैं मगर "मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की" के मिस्दाक़ मरज़ में मुसल्सल इज़ाफ़ा होता और बिल आख़िर मरीज़ दम तोड़ देता है। लिहाज़ा मदनी क़ाफ़िले में किसी मरीज़ को अगर शिफ़ा न मिले तो शैत़ान के वस्वसों में न आएं ﴾2﴿ ऐसे मरीज़ों को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र न करवाएं नीज़ ए'तिकाफ़ में भी न बिठाएं जिन से दूसरों को घिन आए या ईज़ा पहुंचे। एक बार दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर एक कैन्सर के मरीज़ मो'तकिफ़ हो गए, वहां हज़ारों मो'तकिफ़ीन होते हैं, ह़ल्क़े बनाए जाते हैं, एक ह़ल्क़े में वोह

भी शामिल कर लिये गए। इस्लामी भाई जब सह़री और इफ़्तारी करते वोह उन के साथ बैठ भी जाते तो मुंह या गले का कैन्सर होने के सबब बेचारे खा नहीं सकते थे, बेशक वोह ग़रीब बड़े क़ाबिले रह़म थे मगर हर शख़्स येह बात समझ सकता है कि उन के ह़ल्क़े वाले मो'तकिफ़ीन को उस मरीज़ के सबब किस क़दर कोफ़्त (या'नी तक्लीफ़) का सामना होता होगा ! वाक़ेई अगर कोई खाने से मा'ज़ूर मरीज़ जब बैठे बैठे किसी के निवाले ताड़ेगा तो उस खाने वाले पर जो कुछ गुज़रेगी वोह हर ज़ी शुऊ़र आदमी समझ सकता है ﴿3﴾ बा'ज़ मरीज़ों के ज़ख़्म ख़राब हो चुके होते हैं, उन से मवाद रिस्ता और बदबू उठ रही होती है गो वोह हर त़रह़ से हमदर्दी के लाइक़ और क़ाबिले रह़म हैं मगर उन का मरज़ दूसरों के लिये तक्लीफ़ देह होता है इस लिये उन्हें ए'तिकाफ़ और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र नहीं करना चाहिये इस ह़ालत में मस्जिद में दाख़िल होना भी शर्अ़न ह़राम है कि बदबू से आ़म मुसल्मानों और फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है ﴿4﴾ ऐसा आदमी जिस के मुंह से राल बहती हो, जिस ने URINE BAG या STOOL BAG लगाई हो नीज़ जुज़ामी (या'नी कोढ़ी) वग़ैरा भी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और ए'तिकाफ़ न करें । **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** (जिल्द 24) सफ़ह़ा 220 पर नक़्ल करते हैं : एक जुज़ामी औ़रत का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ कर रही थी अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उस से फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** की बन्दी ! लोगों को ईज़ा न दे, अच्छा हो कि तुम अपने घर में बैठी रहो, फिर वोह घर से न निकलीं (موطاامام مالک،1/388،رقم:988) ﴿5﴾ ऐसे नफ़्सियाती मरीज़ या आसेब ज़दा भी

मदनी क़ाफ़िले और मस्जिद से दूर रखे जाएं, जो दौरा पड़ने की सूरत में बेहोश हो जाते या चीख़ते या बे तह़ाशा हाथ पैर उछाल कर मस्जिद की बे अदबी और दूसरों के लिये परेशानी का सबब हों। इस त़रह़ के मरीज़ों को ए'तिकाफ़ में बिठाने या मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाने के बजाए उन के नुमायन्दे सफ़र करें या ए'तिकाफ़ कर के उन के लिये दुआ़ करें। येह भी हो सकता है कि ऐसा मरीज़ या उन के घर वाले एक इस्लामी भाई का या ह़स्बे तौफ़ीक़ जितनों का दे सकें इतनों का ख़र्च दे कर तीन दिन, 12 दिन, एक माह, 12 माह या 25 माह के मदनी क़ाफ़िले में सवाब की निय्यत से सफ़र करवाएं। मरीज़ का नुमायन्दा दुआ़एं मांगता रहेगा **अल्लाह** ग़फ़ूरुर्रह़ीम अपनी रह़मत से शिफ़ा दे देगा। मगर याद रहे! रक़म सिर्फ़ दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से नामज़द क़ाफ़िला ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाई जाए कि वोह अपनी तरकीब से सफ़र करवाएंगे, आप किसी को रक़म दे भी दें तो ज़रूरी नहीं कि वोह सफ़र करे या मुम्किन है अधूरे सफ़र से वापस लौट जाए। याद रहे! मरीज़ की बे जा दिल आज़ारी न होने पाए, उस की इ़यादत की जाए, उस से मेल मिलाप भी रखा जाए बल्कि जहां मदनी क़ाफ़िला बजाए मस्जिद के किसी के मकान वग़ैरा पर ठहरता हो और मदनी क़ाफ़िले वाले मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर किसी घिन लाने वाले मरीज़ को अपने साथ रखना चाहें तब भी ह़रज नहीं। लेकिन इस में येह देख लिया जाए कि बाहर से आने वाले आ़म इस्लामी भाइयों के आने से कतराने या ईज़ा पाने का अन्देशा न हो।

*सदक़ा नबी दी आल दा बख़्शे ख़ुदा शिफ़ा मंगो दुआ़वां मेरे जे बीमार वास्ते*

## हर बीमारी की दवा है

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो!** कैन्सर एक मोहलिक (या'नी हलाक करने वाला) मरज़ है, येह बीमारी डॉक्टरों के यहां "ला इलाज" समझी

जाती है मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं, जैसा कि **मुस्लिम** शरीफ़ में वारिद हुवा, **अल्लाह** करीम के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : ''हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **अल्लाह** पाक के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है।'' (مسلم، ص1210، حدیث:2204) यक़ीनन **बुढ़ापे** और **मौत** के सिवा हर बीमारी का इलाज है। हां येह बात अलग है कि कई अमराज़ का इलाज अत़िब्बा (या'नी डॉक्टर्ज़) अब तक दरयाफ़्त नहीं कर पाए। लिहाज़ा येह कहने के बजाए कि ''फ़ुलां मरज़ का इलाज नहीं है'' मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बीमारी का इलाज नहीं या डॉक्टर्ज़ अभी तक इस मरज़ का इलाज दरयाफ़्त नहीं कर सके। बहर ह़ाल रब्बे करीम चाहे तो दवा शिफ़ा का ज़रीआ़ बने वरना ऐन मुम्किन है कि वोही दवा मौत का पैग़ाम साबित हो ! और येह भी देखा जाता है कि माहिर डॉक्टर की त़रफ़ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बा वुजूद किसी मरीज़ को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और वोह मज़ीद शदीद बीमार या मा'ज़ूर हो जाता या दम तोड़ देता है और फिर बा'ज़ लोगों की जहालत के बाइ़स बेचारे डॉक्टर की शामत आ जाती है। ह़ालां कि येह बात अ़क़्ल से बहुत बईद (या'नी काफ़ी दूर) है कि कोई डॉक्टर किसी मरीज़ को नुमायां जिस्मानी नुक़्सान पहुंचाए या मार डाले ! ज़ाहिर है अगर वोह ऐसा करेगा तो उस की अपनी बदनामी होगी और लोग उस के पास इलाज करवाने से कतराएंगे। हां दीनी तअ़स्सुब और इस्लाम दुश्मनी जुदा चीज़ है, इसी अन्देशे के पेशे नज़र मश्हूर उ़लमा और दीनी पेश्वाओं को ग़ैर मुस्लिमों से इलाज न करवाने ही में आ़फ़िय्यत है कि मबादा (या'नी ऐसा न हो) कोई शदीद जानी नुक़्सान पहुंच जाए। आ़म मुसल्मानों को ग़ैर

मुस्लिम डॉक्टर से इस त़रह़ के मरज़ में इ़लाज करवाने की इजाज़त है जिस में ग़ैर मुस्लिम त़बीब की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) चल न सके।

## ग़ैर मुस्लिम से इ़लाज का इ़ब्रत आमोज़ वाक़ेआ़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 21 सफ़ह़ा 243 पर लिखते हैं : "इमाम मारज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अ़लील (या'नी बीमार) हुए (तो) एक यहूदी मुआ़लिज (या'नी त़बीब, आप का इ़लाज कर रहा) था, अच्छे हो जाते फिर मरज़ औ़द करता (या'नी दोबारा हो जाता), कई बार यूं ही हुवा, आख़िर उसे तन्हाई में बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया, उस ने कहा : अगर आप सच पूछते हैं तो हमारे नज़्दीक इस से ज़ियादा कोई कारे सवाब नहीं कि आप जैसे इमाम को मुसल्मानों के हाथ से खो (या'नी ज़ाएअ़ कर) दूं। इमाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) फ़रमाया, मौला तआ़ला ने शिफ़ा बख़्शी, फिर इमाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने त़िब की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इस में तसानीफ़ कीं और त़लबा को ह़ाज़िक़ अत़िब्बा (या'नी माहिर त़बीब) कर दिया और मुसल्मानों को मुमानअ़त फ़रमा दी कि काफ़िर त़बीब से कभी इ़लाज न कराएं। (फ़तावा रज़विय्या, 21/243) (ग़ैर मुस्लिमों से इ़लाज करवाने के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 238 ता 243 पर मुलाह़ज़ा कीजिये)

## शिफ़ा मिलने न मिलने का राज़

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत शर्ह़े मिश्कात (जिल्द 6) सफ़ह़ा 214 पर साह़िबे मिरक़ात رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब **अल्लाह** पाक किसी बीमार की शिफ़ा नहीं चाहता तो दवा और मरज़ के दरमियान एक फ़िरिश्ते

के ज़रीए़ आड़ कर देता है जिस की वज्ह से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ (या'नी लागू) नहीं होती, जब शिफ़ा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ (या'नी लागू) होती है और शिफ़ा हो जाती है।" (مرقاۃ المفاتیح، 8/289، تحت الحدیث:4515)

## कैन्सर का रूहानी इलाज

एक इस्लामी भाई ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को बताया कि उन के मामूंजान को पेट का कैन्सर हो गया, इलाज जारी था, एक बार अस्पताल में उन्हें किसी ने एक परचा दिया जिस में कुछ इस त़रह़ का मज़्मून था कि एक कैन्सर के मरीज़ को डॉक्टरों ने ला इलाज क़रार दे दिया। बेचारे सख़्त अज़िय्यत में थे और ज़िन्दगी से मायूस। ऐसे में किसी ने उन्हें क़ुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ सूरतों की चन्द मुन्तख़ब आयात पढ़ने के लिये दीं (जो आगे आ रही हैं) उन्हों ने ख़ुलूसे दिल से उन की रोज़ाना तिलावत शुरूअ़ कर दी, **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से उन की सिह़्ह़त बह़ाल होने लगी और चन्द बरसों तक रोज़ाना पढ़ने की बरकत से **कैन्सर** की बीमारी जाती रही और वोह बिल्कुल सिह़्ह़त मन्द हो गए। मामूंजान ने भी परचे में दी हुई हिदायत के मुत़ाबिक़ तिलावत शुरूअ़ कर दी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ (ता दमे बयान) ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मामूंजान की सिह़्ह़त बह़ाल होने लगी है। उन्हों ने **अल्लाह** पाक का शुक्रिया अदा किया और मुसल्मानों को नफ़्अ़ पहुंचाने की निय्यत से मुफ़्त बांटने के लिये ख़ूब सूरत कार्ड की सूरत में उस परचे की 2000 कॉपियां छपवाईं। अगर मरीज़ इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से पक्की अ़क़ीदत के साथ इन आयात की तिलावत करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ मायूस न होगा, (मुद्दत ता ह़ुसूले शिफ़ा)

(अव्वल व आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़ के साथ रोज़ाना एक बार येह आयात पढ़िये)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

﴿ وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ ﴾[1] ﴿ وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴾[2]

﴿ رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴾[3] ﴿ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ يَكْشِفُ السُّوْٓءَ ﴾[4] ﴿ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴾[5] ﴿ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴾[6] ﴿ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴾[7] ﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴾[8] ﴿ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴾[9] ﴿ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴾[10] ﴿ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴾[11] ﴿ وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴾[12] ﴿ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ ﴾[13] ﴿ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِيْرُ ﴾[14] ﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴾[15] ﴿ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِيْرُ ﴾[16] ﴿ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ؕ ﴾ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

## सीधे हाथ से पियें कि सुन्नत है

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** बेशक आ़लिमे बा अ़मल की सोह़बत में नफ़्ए़ आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल मिलते रहते हैं, हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه भी आ़लिमे बा अ़मल थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की आ़दते करीमा थी कि जब भी किसी को सुन्नत तर्क

---

1 پ15، بنی اسرائیل:82۔ 2 پ19، الشعراء:80۔ 3 پ18، المؤمنون:118۔ 4 پ20، النمل:62۔
5 پ17، الانبیاء:69۔ 6 پ17، الانبیاء:83۔ 7 پ27، القمر:10۔ 8 پ17، الانبیاء:87، 88۔ 9 پ12، هود:57۔ 10 پ4، اٰل عمران:173۔ 11 پ5، النساء:81۔ 12 پ24، الزمر:36۔ 13 پ17، الحج:78۔
14 الفاتحہ:1۔ 15 پ9، الانفال:40۔ 16 پ18، المؤمنون:14۔

करता मुलाह़ज़ा करते तो उस की इस्लाह़ फ़रमाते चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ही के एक शागिर्दे रशीद बयान करते हैं : 1373 हि. का वाक़िआ़ है कि एक दिन दर्से ह़दीस के दौरान जब कि मुस्लिम शरीफ़ का दर्स शुरूअ़ था। एक साहिब "दारुल ह़दीस" में त़लबा के लिये चाय ले आए। दर्स ख़त्म होने पर ह़ज़रते शैख़ुल ह़दीस मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इशारे पर चाय तक़्सीम होने लगी। जब इस नाचीज़ की बारी आई तो बन्दे ने दाएं (या'नी सीधे) हाथ में कप पकड़ा, पिरच (या'नी प्लेट) में चाय डाली और बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से प्लेट मुंह के क़रीब ले गया। ह़ज़रत मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आवाज़ "दारुल ह़दीस" में गूंजी : मौलाना ! आप बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से पी रहे हैं ! बन्दे ने कप नीचे रख कर दाएं (या'नी सीधे) हाथ से प्लेट पकड़ी और पीने लगा। जब दोबारा कप से पिरच (या'नी प्लेट) में चाय डालने लगा तो फिर आवाज़ आई। मौलाना ! आप बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से डाल रहे हैं। तो बन्दे ने प्लेट रख दी, दाएं (या'नी सीधे) हाथ में कप ले कर पीने लगा। तो ह़ज़रत मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने तबस्सुम फ़रमाया और ज़बाने मुबारक से येह अल्फ़ाज़ फ़रमाए : "**طَیِّب طَیِّب** या'नी अब ठीक है।" अब भी तन्हाई में बैठे हुए जब येह वाक़िआ़ याद आता है और **طَیِّب طَیِّب** के अल्फ़ाज़ की गूंज कानों में आती है तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 157)

## उल्टे हाथ से खाना, पीना लेना देना शैत़ान का त़रीक़ा है

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** इस वाकिअे़ से ह़ज़रत मुह़द्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सुन्नत से मह़ब्बत का बख़ूबी अन्दाज़ा किया जा सकता है। काश ! हम सब भी नेकी की दा'वत का येही अन्दाज़ इख़्तियार करते हुए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की धूम मचाते रहें। मज़्कूरा (या'नी बयान कर्दा)

वाकिऐ में उल्टे हाथ से चाय पीने से मन्अ़ करने का तज़्किरा है और ह़दीसे पाक में उल्टे हाथ से खाने पीने की मुमानअ़त मौजूद । चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1548 सफ़ह़ात की किताब, ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 230 ता 232 पर है : ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम में से हर एक सीधे हाथ से खाए और सीधे हाथ से पिये और सीधे हाथ से ले और सीधे हाथ से दे क्यूं कि शैत़ान उल्टे हाथ से खाता और उल्टे हाथ से पीता उल्टे हाथ से देता और उल्टे हाथ से लेता है।'' (ابن ماجہ، 4/12، حدیث:3266)

## हर काम में उल्टा हाथ क्यूं...?

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अफ़्सोस ! आज कल हम दुन्या के चक्कर में इस क़दर घिर चुके हैं कि मह़बूबे बारी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों की त़रफ़ हमारी तवज्जोह ही नहीं रहती । याद रखिये ! ह़दीसे मुबारक में है कि ''बेशक शैत़ान इन्सान (के बदन) में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है।'' (بخاری، 1/669، حدیث:2038) ज़ाहिर है कि येह हमें सुन्नतों की त़रफ़ कहां जाने देगा ? शैत़ान पीछे लगा ही रहता है अगर्चे सीधे हाथ से ही खाना खाते हैं लेकिन फिर भी उल्टे हाथ से कुछ न कुछ दाने फांक ही लिये जाते हैं, खाते हुए चूंकि सीधा हाथ आलूदा होता है लिहाज़ा अक्सर लोग पानी उल्टे ही हाथ से पीते हैं, चाय पीते वक़्त कप सीधे हाथ में और रिकाबी उल्टे हाथ में लिये चाय पीते हैं, किसी को पानी पिलाते वक़्त जग सीधे हाथ में होता है जब कि गिलास उल्टे में और उल्टे हाथ से गिलास दूसरों को देते हैं। ''ह़यातु मुह़द्दिसे आ'ज़म'' सफ़ह़ा 374 पर है मुह़द्दिसे आ'ज़म ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी चिश्ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''लेने और देने में दाएं (या'नी सीधे) हाथ को इस्ति'माल करो, येह आ़दत

ऐसी पुख़्ता (या'नी पक्की) हो जाए कि कल क़ियामत में जब नामए आ'माल पेश हो तो इसी आ़दत के मुवाफ़िक़ दायां (या'नी सीधा) हाथ आगे बढ़ जाए तब तो काम बन जाएगा।"

*या इलाही ! नामए आ'माल जब खुलने लगें   ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 133)

**मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ :** मख़्लूक़ के ऐ़ब छुपाने वाला। **सत्तारे ख़त़ा :** ग़लत़ियां छुपाने वाला।

**शर्हे़ कलामे रज़ा :** मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुनाजात के इस शे'र के पहले मिस्रए़ में "नामए आ'माल जब खुलने लगें" लिखा है, आख़िरी लफ़्ज़ "लगे" न लिखने में भी अ़जीब ह़िक्मत है। "लगे" लिखते तो मा'ना येह होते हैं कि जब मेरा आ'माल नामा खुल रहा हो, और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه चाहते हैं कि काश ! अपना आ'माल नामा खोला ही न जाए बस यूं ही बे ह़िसाब बख़्शिश हो जाए लिहाज़ा "लगे" नहीं बल्कि "लगें" लिखा चुनान्चे इस शे'र के मा'ना येह बनेंगे : उस वक़्त मेरा आ'माल नामा खोला ही न जाए बल्कि प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिपुर्द कर दिया जाए जिन्हें तू ने अपने फ़ज़्लो करम से "सत्तारे ख़त़ा" या'नी "ख़त़ाएं छुपाने वाला" बनाया है अगर तू ने येह करम फ़रमा दिया तो फिर मेरी ना फ़रमानियां जानें और उन की करम नवाज़ियां जानें।

ह़ज़रते सय्यिद दीदार अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं :

*वक़्ते नज़्अ़, वक़्ते मर्गो वक़्ते वह़्शत, क़ब्र में   ह़श्र में उस शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा का साथ हो*

*या इलाही जब अ़मल तुलने लगें मीज़ान में   शाफ़ेए़ मह़शर शहे हर दो सरा का साथ हो*

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

# अगले हफ़्ते का रिसाला